## भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर (2020-2021)

## प्रश्न बैंक – कक्षा 10 विषय–हिंदी (पाठ्यक्रम-ब) पाठ: डायरी का एक पन्ना (सीताराम सेकसरिया)

1. कलकत्तावासियों के लिए २६ जनवरी, १९३१ का दिन क्यों महत्त्वपूर्ण था?

**उत्तर:** २६ जनवरी, १९३१ को कलकत्तावासी महात्मा गाँधी द्वारा घोषित आज़ादी की दूसरी सालगिरह मना रहे थे। इसलिए वह दिन उनके लिए महत्त्वपूर्ण था।

2. लोग अपने-अपने मकानों तथा सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर क्या संकेत देना चाहते थे?

**उत्तर:** लोग अपने-अपने मकानों तथा सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर आज़ादी की भावना का संकेत देना चाहते थे।

3. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

**उत्तर:** पुलिस बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को घेरकर ज़्यादा लोगों के जमाव को रोकना चाहती थी, जिससे माहौल नियंत्रण में रहे।

4. २६ जनवरी, १९३१ को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई थीं?

**उत्तर:** २६ जनवरी, १९३१ को अमर बनाने के लिए मुख्य कार्यकर्ताओं ने अधिक-से-अधिक लोगों को जुटाने की पूरी तैयारी की थी। इसके साथ ही जन-जन तक आज़ादी की भावना को पहुँचाने की कोशिश की थी। हर गली और हर मोहल्ले में ज़बरदस्त सजावट की गई थी। हर तरफ़ का माहौल जोश से भरा हुआ लगता था।

5. 'आज जो बात थी, वह निराली थी।' – किस बात से पता चलता है कि आज का दिन निराला था?

**उत्तर:** लोगों की तैयारी और उनका जोश देखते ही बनता था। एक तरफ़ पुलिस की पूरी कोशिश थी कि स्थिति उनके काबू में रहे, तो दूसरी ओर लोगों का जुनून पुलिस की कोशिश के आगे भारी पड़ रहा था। हर पार्क तथा मैदान में भारी संख्या में लोग इकट्ठा हुए थे। जोश भरा माहौल बता रहा था कि वह दिन वाकई निराला था।

6. पुलिस कमिश्नर के नोटिस और काउंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

**उत्तर:** पुलिस कमिश्नर का नोटिस सभा और आज़ादी के जश्न को रोकने के लिए था। उसमें कहा गया था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे, उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। दूसरी तरफ काउंसिल का नोटिस लोगों का आह्वान कर रहा था कि वे भारी संख्या में आकर आज़ादी का उत्सव मनाएँ। मॉन्युमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी। दोनों नोटिस एक दूसरे के विरोधाभासी थे।

7. धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

**उत्तर:** धर्मतल्ले के मोड़ पर पुलिस ने कुछ लोगों को पकड़ लिया तथा लाठी भी चलाई। कुछ लोग आगे बढ़ने में कामयाब हो गए। इस तरह वहाँ पर आकर जुलूस टूट गया।

8. डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देखभाल तो कर ही रहे थे, उनकी फ़ोटो भी उतरवा रहे थे। फ़ोटो उतारने की क्या वजह हो सकती है?

**उत्तर:** फ़ोटो उतरवाने का एक ही मक़सद हो सकता है। प्रेस में घायलों की फ़ोटो जाने से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के स्वाधीनता संग्राम को प्रचार मिल सकता था। इसके साथ ही सरकार द्वारा अपनाई गई बर्बरता को भी

दिखाया जा सकता था।

9. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री-समाज की क्या भूमिका थी?

**उत्तर:** सुभाष बाबू के जुलूस में सुभाष बाबू को तो शुरू में ही पकड़ लिया गया था। उसके बाद स्त्रियों ने पूरी तरह से जुलूस को आगे बढ़ाने का ज़िम्मा ले लिया था। धर्मतल्ले के मोड़ पर ५०–६० स्त्रियों ने धरना दे दिया। आखिर में क़रीब १०५ स्त्रियाँ पकड़ी गईं। जिस तरह से स्त्रियों ने जुलूस के तितर-बितर होने के बाद भी मामले को आगे बढ़ाया, उससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि स्त्रियों ने बख़ूबी उस दिन अपना योगदान दिया था।

10. जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

**उत्तर:** लालबाज़ार आने पर ज़्यादातर लोगों पर लाठियाँ चलाई गईं। अधिकांश लोगों को पकड़ लिया गया। बहुत से लोग घायल हुए। इस तरह से वहाँ पर जाकर जुलूस समाप्त हो गया।

11. "जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है, तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए एक ओपन लड़ाई थी।" यहाँ पर कौन-से और किसके कानून के भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में बताइए।

**उत्तर:** प्रस्तुत कथन में अंग्रेज़ों द्वारा लगाए गए प्रतिरोध को भंग करने की बात की गई है। पाठ में जिस तरह से आज़ादी के जोश का चित्रण हुआ है, उससे स्पष्ट होता है कि उस माहौल में कानून भंग करना उचित था।

12. बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉक-अप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है?

**उत्तर:** जैसा कि आखिरी अनुच्छेद में वर्णन किया गया है, इसके पहले कलकत्ता में इतने बड़े पैमाने पर आज़ादी की लड़ाई में लोगों ने शिरकत नहीं की थी। उस दिन जनसमूह का बड़ा सैलाब कलकत्ता की बुरी छवि को कुछ हद तक धोने में कामयाब होता दिख रहा था। इसलिए लेखक को वह दिन अपूर्व लग रहा था।

**निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए:**

1. आज जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।

**उत्तर:** उस सभा के पहले कलकत्ता में पहले कभी लोगों ने इतना बढ़-चढ़ कर स्वाधीनता-संग्राम में हिस्सा नहीं लिया था। इस कारण से कुछ लोग हमेशा कलकत्ता पर यह आरोप लगाते थे कि वहाँ के लोग ग़ुलामी को ही पसंद करते हैं। लेकिन उस दिन जो कुछ हुआ, उससे कलकत्ता के नाम पर लगा दाग़ धुलने में बहुत सहायता मिली होगी।

2. खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

**उत्तर:** पुलिस और प्रशासन के मना करने के बावजूद लोगों ने उस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। नौकरी जाने की परवाह किए बिना कई सरकारी मुलाज़िमों ने भी अपनी शिरकत की। इसलिए कहा गया है कि खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

**अतिरिक्त प्रश्न:**

1. 'शायद पुलिस अपना रंग न दिखलावे पर वह कब रुकने वाली थी' - इस पंक्ति से क्या आशय है?

**उत्तर**: अंग्रेज़ पुलिस अपनी बर्बरता और निर्दयता के लिए प्रसिद्ध थी। 26 जनवरी, 1931 के दिन जब मॉन्युमेंट के पास 4:24 पर झंडा फहराया जाना था तो दोपहर के समय पुलिस कुछ सुस्त दिखी। पुलिस लोगों को रोक-टोक नहीं रही थी। इससे लोगों को आशा हो गई थी कि अब शायद क्रांतिकारियों को सरलता से अपना प्रदर्शन करने देगी लेकिन ऐसा नहीं

हुआ। पुलिस ने बाद में क्रांतिकारियों पर निर्दयतापूर्वक लाठियाँ बरसाई थीं जिससे अनेक लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

2. स्वतंत्रता आंदोलन में विद्यार्थियों की क्या भूमिका थी?

**उत्तर**: विद्यार्थियों की भूमिका भी सराहनीय थी। मारवाड़ी बालिका विद्यालय जैसे अनेक विद्यालयों में लड़कियों ने झंडोत्सव मनाया था। उन्हें जानकी देवी, मदालसा जैसी नेत्रियों ने संबोधित किया था। बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने भी झंडा फहराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इससे सिद्ध होता है कि स्वतंत्रता-संघर्ष में विद्यार्थियों का भी भरपूर योगदान था।

3. वृजलाल गोयनका का परिचय दीजिए।

**उत्तर**: वृजलाल गोयनका कांग्रेस का एक कार्यकर्ता था। वह लेखक के साथ काफ़ी समय से स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय योगदान दे रहा था। वह लेखक के साथ दमदम जेल में भी था। 26 जनवरी, 1931 को जब कोलकाता में जुलूस निकला तो वह भी उसमें शामिल था। वह झंडा लेकर 'वंदे मातरम्' बोलता हुआ मॉन्युमेंट की ओर तेज़ी से दौड़ा किंतु अपने आप ही गिर पड़ा। उसे एक अंग्रेज़ घुड़सवार ने लाठी मारी और फिर पकड़ कर कुछ दूर ले जाकर छोड़ दिया। इसके बाद वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया और उसे वहाँ भी पकड़ कर छोड़ दिया गया। तब वह 200 आदमियों का जुलूस बनाकर फिर प्रदर्शन करने लगा तो उसे गिरफ़्तार कर लिया गया।

4. 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर बड़े बाज़ार के दृश्य का वर्णन कीजिए।

**उत्तर**: बड़े बाज़ार के प्रायः सभी मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कोलकाता के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से लोग जाते थे, उसी रास्ते उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताक़त से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लॉरियों में गोरखे तथा सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लॉरियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं। घुड़सवारों का प्रबंध था। कहीं भी ट्रैफ़िक पुलिस नहीं थी, सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था। लेखक ने सरल शैली में बाज़ार का प्रभावशाली दृश्य प्रस्तुत किया है।

5. 'डायरी का एक पन्ना' पाठ क्या संदेश देता है?

**उत्तर**: प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की कामना करने वाले उन्हीं अनंत लोगों में से एक थे। वह दिन-प्रतिदिन जो भी देखते, सुनते और महसूस करते थे, उसे अपनी निजी डायरी में दर्ज़ कर लेते थे। यह क्रम कई वर्षों तक चला। इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी, 1931 का लेखा-जोखा है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस और स्वयं लेखक सहित कोलकाता के लोगों ने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस किस जोश-खरोश से मनाया, अंग्रेज़ प्रशासकों ने इसे उनका अपराध मानते हुए उन पर और विशेषकर महिला कार्यकर्ताओं पर कैसे-कैसे ज़ुल्म ढाए, यही सब इस पाठ में वर्णित है। यह पाठ हमारे क्रांतिकारियों की क़ुर्बानियों की याद तो दिलाता ही है, साथ ही यह भी उजागर करता है कि एक संगठित समाज कृतसंकल्प हो तो ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके।